रामेश्वरम का अर्थ का अनर्थ-:

रामेश्वर शिवलिंग का सीधा सा मतलब यह है कि जो राम के भी ईश्वर हैं हो रामेश्वर हैं। विष्णु अवतार भगवान श्री रामचंद्र जी के द्वारा स्थापित यह शिवलिंग गौ हत्या ब्रह्म हत्या का भी निवारण करने वाला है। पद्म महापुराण के पातालखंड के अनुसार भगवान श्री रामचंद्र ने भगवान अगस्त्य ऋषि से शिव मंत्र की दीक्षा प्राप्तकीए थे.... भगवान श्री रामचंद्र की भक्ति से प्रसन्न होकर वहां पर भगवान शिव उन्हें दर्शन भी दिए थे और वहां पर भगवान श्री रामचंद्र के मन में जो अज्ञात भय पैदा हो गया था उस भयका निवारण करने के लिए उन्हें अपना विराट विश्वरूप दिखलाए थे। वहां पर भगवान शिव ने रामचंद्र जी को जो ज्ञान प्रदान किए थे तथा अपना विश्वरूप दिखाई थी उसे प्रसंग को शिव गीता कहा जाता है। यह आपको पद्म महापुराण में देखने को मिलजाएगा। पर यहां पर मैं रामेश्वरम शिवलिंग के बारे

में क्यों लिख रहा हूं....!!! क्योंकि रामेश्वरम शिवलिंग से भी बहुत सारे पाखंडियों को एलर्जी हो रहा है । इसलिए हो अब क्या कर रहे हैं व्याकरणगत अर्थ बदलने का कोशिश कर रहे हैं रामेश्वरम के ऊपर..... और हो एक नया अर्थ निकाले हैं...... राम जिसका ईश्वर है हो रामेश्वर है........ और सबसे बड़ी हंसी की बात यह है कि यही लोग अपने आप को बहुत बड़ा व्याकरणविद् मान रहे हैं । मैं उन पाखंडियों को एक प्रश्न पूछना चाहूंगा...... शिवजी का नाम नागेश्वर भी है..... यानी की नाग जिसका ईश्वर है हो नागेश्वर है.... या फिर संपूर्ण नागों जिन ईश्वर का पूजन करते हैं हो नागेश्वर हैं .....??? शिवजी का एक शिवलिंग का नाम दुर्वासेश्वर है.... यानी की दुर्वासा जिसका ईश्वर है हो दुर्वासेश्वर है....या फिर ऋषिदुर्वासा जिन ईश्वर का पूजन करते हैं हो दुर्वासेश्वर हैं.... ??? । ब्रह्मा विष्णु इंद्र वरुण कुबेर ऋषि मुनि देव दानव गंधर्व किन्नर , महाग्रह , योगिनी आदिया के द्वारा स्थापित अनेक शिवलिंग का वर्णन शास्त्रों में मिल जाता है...... क्या शिव उन सब का भजन कीर्तनकरते हैं..... या फिर हो सब भगवान शिव का भजन कीर्तन किये हैं.....???? वैसे तो इस प्रश्न का उत्तर तुम्हें शास्त्र में भी मिल जाएगा और शास्त्र से पहले थोड़ा अपने विवेक से पूछ लो..... । अगर शिव और राम में प्रेम दिखाना ही है तो रामप्रियं या शिवप्रियं कहकर भी दिखाया जा सकता है..... पर पाखंडियों को प्रेम दिखाना नहीं है उनको तो बस अर्थ का अनर्थ करना है..... चाहें उसके लिए.... भावार्थ का धज्जियां क्यों ना उड़जाए इन लोगों के लिए बस एक ही बात कहूंगा..... ए राजू लाठी लारे बाबा

सुताम्रपर्णीजलराशियोगे निबध्य सेतुं विशिखैरसंख्यैः।
श्रीरामचन्द्रेण समर्पितं तं रामेश्वराख्यं नियतं नमामि॥